x: vk }kjk fn;k x;k ekx J"B

पं0 केशव रघुनाथ तले गोवकर

आगरा

वर्तमान समय में जिस प्रकार का सांगीतिक वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा है, जिसमें अपने संगीत महापुरुषों के कार्यों पर दृष्टिक्षेप कर स्वयं व्यक्तिवादिता को अग्रसर कर स्वयंभू बनने की जो प्रहि या चल रही है, वह आने वाले समय में संगीत जगत हेतु घातक साबित होगी और उसके अंतर्गत जिन महापुरुषों ने अपने त्याग, निष्ठा एवं समर्पण से आज संगीत साधना को जिस प्रकार से स्थापित किया, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। लेकिन वर्तमान करम साधक उन सभी अस्मिताओं को दर किनार कर ''स्वयं भू गुरू'' बनते जा रहे हैं।

मुझे याद है कि पुराने संगीतज्ञ हमेशा एक दूसरे से सप्ताह में, 15 दिन में मिलकर आपस में प्रेमपूर्वक वार्ता करते थे। आज के तथाकथित संगीतज्ञों में इन बातों का अभाव दिखाई देता है। समय –समय पर मिलकर संगीत चर्चा करना, उसके माध्यम से दृष्टिकोण व्यक्त करना और कितना भी विचार विभेद क्यों न हो आपसी संबंधों को आत्मीयता के साथ कायम करना यह पुराने संगीतज्ञों की अपनी विशेषता थी। आज पता नहीं इन सबका विशेष अभाव होता दीख रहा है। कलाकार को जहां व्यवसायिकता नजर आती है, वहां उसका सरोकार रहता है और जहां इसकी कमी दृष्टिगत होती है वहां वह बिल्कुल अपने तक सीमित हो जाता है।

नियमित साधना का अभाव, विचारों की संकीर्णता, समर्पण, निष्ठा की कमी के कारण आज का संगीतज्ञ बर्हिमुखी ज्यादा और अंतर्मुखी कम है जिसके कारण वह स्वयं अपना आंकलन करने में असमर्थ है। जिन गुरूओं ने हमें अपनी साधना का अंश देकर हमें इस योग्य बनाया हम उनके प्रति भी एकनिष्ठ नहीं हैं। क्या कारण है कि वर्तमान संगीतज्ञ एक–दूसरे के निकट नहीं हैं। मेरा यह मानना है कि हमारे विचार व्यक्तिगत रूप से अलग हो सकते हैं लेकिन हमारा ध्येय तो संगीत की सेवा करना है, उसमें एक साथ रहने में क्यों हिचकिचाहट। इन सब कार्यों के लिए वामांगी होना कितना सार्थक है ?

आईये, हम सब मिलकर उन पुण्य प्रतापी श्रेष्ठ गुरूओं द्वारा दिये गये मार्ग का अपनी कथनी करनी में सामंजस्यता करते हुए एकाकार करें तभी इस भौतिकवादी युग में संगीत के अंतरगता को समरसता में बदल सकेंगे। मैं इस लेख के माध्यम से वर्तमान में प्रारंभ होने वाले ई पेपर को अपनी शुभकामनायें देता हूघतथा आशा करता हूं कि वर्तमान में नवीन वैज्ञानिक प्राविधानों के माध्यम से यह पत्र अपनी सार्थकता सिद्ध करेगा तथा नवीन ज्ञान जिज्ञासुओं की पिपासा को शान्त करेगा।

जय नाद ।